International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2016; Page No. 10-11

'अज्ञेय' की कहानियॉ और मनोविज्ञान

हरीश कुमार सोनी

चंद्रशेखर आजाद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सीहोर (म.प्र.)

प्रस्तावना

अज्ञेय एक ऐसे व्यक्तित्व का नाम है जो आज भी साहित्यिक निधि का कोहीनूर बना है। वे साहित्य में सिद्ध हस्ताक्षर है। वे साहित्य की सभी विधाओं में उपस्थित है। वे कहानी विधा में अपना सशक्कत अस्तित्व रखते हैं। उनकी कहानियों में मनोविज्ञान अत्यंत गहराई से रचा–बसा है। अज्ञेय एक कुशल षिल्पकार हैं, वे व्यक्ति के अंतर्मन में झांककर, उनकी मनःस्थिति को समझकर, मन की ऊहा–पोह की पड़ताल करते हैं। उनकी कहानियों में मानव के अंतर्मन को छूने की अपार ऊर्जा–शक्ति विद्यमान है। अज्ञेय की कहानियों के मूल में बाह्य यथार्थ न्यून और आंतरिक यथार्थ अधिक है। कहानियों के संसार में अज्ञेय एक ऐसे विशुद्ध मनोवैज्ञानिक कहानीकार के रूप में विख्यात है, जिनकी कहानियों में मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। डॉ. देवराज उपाध्याय ने ''वर्ण्यविषय और विषयविन्यास, दोनों ही दृष्टियों से अज्ञेय को 'सर्वश्रेष्ठ मनोवैज्ञानिक कथाकार' माना है।''[1] मुंशी प्रेमचंद ने भी कहा है कि 'सबसे उत्तम कहानी वह होती है जिसका आधार कोई मनोवैज्ञानिक सत्य हो।' अज्ञेय कहानियों के विषय और शिल्प दोनों ही मनोवैज्ञानिक कहानियों के अनुकूल है। मनोवैज्ञानिक कहानीकार के रूप में अज्ञेय इस बात पर बल देते हैं कि कोई घटना घटित होने में किन स्थितियों–परिस्थितियों को योग है।

अज्ञेय ने कई गम्भीर मनोवैज्ञानिक ग्रंथों का अध्ययन किया और उनका उपयोग अपनी कहानियों में कहानी की मांग पर किया। अज्ञेय की कहानी 'रोज' एक उच्चकोटी की चरित्र प्रधान कहानी है, जिसमें आंतरिक घटनाएं अपना असर दिखाती है। कहानी में मध्यवर्गीय परिवार की, विशेष रूप से कहानी की पात्र 'मालती' की स्थिति को उजागर किया है। 'मालती' एकरस और यंत्रनुमा बनी हुई है। उसके जीवन में कोई परिवर्तन नहीं है, उसका जीवन जड़ बन गया है। रोज एक जैसे काम ने उसे उत्साहहीन बना दिया है। 'मालती' पर व्यस्तता इतनी हावी है कि उसने अपने मित्र से ये तक नहीं पूछा कि 'कैसे हो?' इत्यादि। यहां अज्ञेय ने वैचारिकता को शब्द दिये हैं– ''मुझे ऐसा जान पड़ा, मानो किसी जीवित प्राणी के गले में किसी मृत जन्तु का तौक डाल दिया गया हो, वह उसे उतारकर फेंकना चाहे, पर उतार न पाये.....''[2] अज्ञेय ने मध्यवर्गीय स्त्री की घुटन, पीड़ा, एकरसता, ऊब और परिवर्तनहीनता को उघाड़ा है। 'मालती' एक व्यक्ति न होकर एक वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। डॉ. सुरेन्द्र चौधरी 'रोज' की 'मालती' पर दृष्टिपात करते हैं– ''वह दमघुट जिन्दगी का भार ढोने वाली नारियों का प्रतिनिधित्व करती है इस कहानी में पति और परिवार के द्वारा निरन्तर व्यस्त बनाई जाकर कोमल भावों और सौंदर्य के सूक्ष्म संवेदनों में निस्पंद हो जाने वाली नारी के जीवन की भावोल्लासविहीन यांत्रिकता का अंकन है।''[3] मालती के साथ ही पतिदेव डॉ. महेश्वर भी एकरसता और परिवर्तनहीनता के नरक चक्र में फंसे हैं। वे सुबह सात बचे डिस्पेंसरी जाते हैं, दोपहर को आकर शाम को फिर चले जाते हैं। नित्य का वही काम, उसी प्रकार के मरीज, वही हिदायतें इत्यादि। उनके पूरे परिवार को एकरसता ने अपने 'पाश' में जकड़ रखा है। अज्ञेय जी की कहानी कला का विकास 'हीलीबोन की बत्तखें' है। इसमें उन्होंने नारी मनोविज्ञान को प्रस्तुत किया है। कहानी की पात्र 'हीली' उम्र के चौंतिसवें वर्ष में अकेली है। उसकी मनोव्यथा और मनोभावों को अज्ञेय एक कुशल शिल्पकार की भांति चित्रित कर दृश्यात्मक बनाते हैं। स्त्री–पुरूष के काम सम्बंध का एक सामाजिक पहलू संतान होती है। ''संतान का अभाव जीवन की सार्थकता पर ही प्रश्नचिन्ह खड़ा कर देता है।''[4] 'हीली' अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए बत्तखें पालती है। आये दिन एक लोमड़ी बत्तखों का शिकार कर लेती है। बत्तखों का शिकार करने वाली लोमड़ी केप्टन दयाल की गोली का शिकार हो जाती है। जब 'हीली' लोमड़ी का नितांत घरेलू दृश्य देखती है तो उसके अंतर्मन में उथल–पुथल होने लगती है। वह सोचती है कि शिकार कर परिवार पालन उसका कर्म है, 'गीता' में भी कर्म को सर्वोपरी माना है। ''जंगली पारिवारिकता के तहत अगर वह बत्तखें खाती है तो वह डाकू नहीं हो जाती।''[5] लेकिन केप्टन दयाल ने तो अपने शौक के लिये शिकार किया है, डाकू लोमड़ी नहीं है, केप्टन दयाल है। वह केप्टन से कहती है ''दूर हटो हत्यारे''[6] 'हीली' की वैचारिकता ने उसे चरित्र के शिखर पर बैठा दिया। 'पुरूष का भाग्य' कहानी अज्ञेय की अप्रतिम मनोवैज्ञानिक कहानी है। अज्ञेय ने कहानी की पात्र 'प्रतिमा' के मानस पटल की द्वंद्वात्मकता को बड़े ही कलात्मक और मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है। 'प्रतिमा' का पति एक षड्यंत्र केस में फंस गया और उसे फांसी की सजा मिली। यह स्त्री अब मॉ बन गई। ''वरे हुए पुरूष का खोना और जने हुए पुरूष का पाना इतना पास पास हुआ कि वह उद्भ्रांत सी हो गई।''[7] अब उसके पुत्र को भी छीन लिया गया और तब 'प्रतिमा' एक ग्रंथी की शिकार हो गई, जिसकी अभिव्यक्ति उसकी विक्षिप्त कियाओं में दिखती है। जब उसे कोई ऐसी वस्तु दिख जाती जो उसे पुत्र की याद दिलाए तब उसके मानस–पटल पर अनेक स्मृतियां तैरने लगती है। जब वह किसी बच्चे के पैरों की छाप का स्पर्श करती है तो विचलित और उद्विग्न हो जाती है। ''वह औरत एकाएक अचकचा कर रूकी, हड़बड़ाई सी पैर बचाकर एक ओर हटी और फिर सिमटकर बचती हुई सी आगे बढ़ी, दो कदम चलकर रूकी और फिर धीरे धीरे कांपती सी आगे चली गई.....''[8] अज्ञेय ने 'कविता और जीवन' कहानी में भी मनोविज्ञान के छोटे–छोटे दृश्यों को कैद किया है। कहानी का पात्र 'शिवसुन्दर' कविता के न बनने पर विचलित सा है, वह कभी ऊंघ लेता है और फिर जाग जाता है। अचानक नूपुर की ध्वनि सुनकर उसकी मानसिक ग्रंथी तेज हो गई। उसे पूरे दिन में देखी सारी स्त्रियों की स्मृति हो आयी, लेकिन जब पता चला कि यह किसी स्त्री के नूपुर नहीं है वरन् एक सूखा पौध है तो उसकी सभी कल्पनाएं– पायल, नूपुर, पानवाली, तमोलिन, हलवाई की लड़की– एक ही पल में ध्वस्त हो गयी। जब व्यक्ति के स्मृति–चिन्ह टूटते हैं तो वह विद्रोही हो जाता है। 'शिवसुन्दर' ने सूखे पौधे को जड़ समेत नोच डाला। उसे लगा वह अतृप्त और भूखा रह गया। अब वह झरोखे के पास बैठकर भक्त–भक्तिनियों की भीड़ को देखने लगा। दो स्त्रियों ने 'शिवसुन्दर' को देखा तो उसे लगा कि यही प्रेम है और प्रेम ही जीवन का मधुरतम् रस है। दूसरे जोड़े के विरोधी नेत्रों को देख

उसे लगा 'विरोध में ही आकर्षण होता है।' अब आती–जाती टोलियों में से किसी ने भी झरोखे की ओर नहीं देखा, तब 'शिवसुन्दर' का तर्कशास्त्र चूर–चूर हो गया। उसने तड़पकर कहा– ''नहीं नहीं, यह नहीं है जीवन! यह झूठ है, यह असत् है, अशिव है, असुन्दर है, यह हो ही नहीं सकता, यह जीवन नहीं है।''[9]
इस घटना ने उसे उद्वेलित कर दिया, वह क्रोध से भर गया और स्वयं से संघर्ष तथा विद्रोह के लिए बाध्य हो गया। वह झरोखे से दूर हट गया।

निष्कर्षत

अज्ञेय ने उत्कृष्ट मनोवैज्ञानिक कहानियों को अपनी लेखनी से सृजित किया है। कहानियों के पात्रों के अंतस में उथल–पुथल और द्वंद्व का उचित अंकन अज्ञेय ही कर सकते हैं। उनकी मनोवैज्ञानिक कहानियॉ अपना असर अवश्य ही दिखाती है। उनकी इन कहानियों में संघर्ष के स्वर मुखरित हुए है।

संदर्भ ग्रंथ

1. आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान : डॉ. देवराज उपाध्याय : पृष्ठ 210
2. अज्ञेय की सम्पूर्ण कहानियॉ : रोज : पृष्ठ 208
3. भाषा त्रैमासिक / मार्च,1981 / 27
4. अज्ञेय–संदर्भ और प्रकृति : डॉ. चंद्रभान सोनवणे : पृष्ठ 152
5. कवि कहानीकार अज्ञेय और मुक्तिबोध : संवेदना और दृष्टि : डॉ. भरतसिंह : पृष्ठ 80
6. अज्ञेय की सम्पूर्ण कहानियॉ : हीलीबोन की बत्तखें : पृष्ठ 542
7. अज्ञेय की सम्पूर्ण कहानियॉ : पुरूष का भाग्य : पृष्ठ 469
8. अज्ञेय की सम्पूर्ण कहानियॉ : पुरूष का भाग्य : पृष्ठ 460
9. अज्ञेय की सम्पूर्ण कहानियॉ : कविता और जीवन : पृष्ठ 462